

#### 4.12. Memorabilia

**Ms Sudha S Murthy**

*Sr. Librarian*

17.6.1998.

*The NTI library comes under specialised Health Sciences libraries. Such special causes libraries have been set up for major diseases like TB, cancer and malaria. These libraries assist paramedics, medics, postgraduates, researchers, workers in the field and the government in prevention and control of a particular disease. NTI library was established from the day the institute was setup.*

*In the beginning, the budget allotment was meager. We were not procuring many books because of paucity of funds. We had to depend on foreign sources. UNICEF and WHO helped in a big way by donating several important documents.*

*I joined eight years after the NTI was born, in 1967. I must say all the directors have been encouraging the growth and expansion of the library. All our faculty and staff also have the same attitude and I am extremely happy it has been nourished by them. I have started the archival centre here. I have kept first copies of all the protocols, manuals, work instructions, papers and other important documents like WHO quarterly reports and monitoring reports in safe custody. I have also retained so many things which people glance at and throw away: e.g., souvenirs, pamphlets, propaganda material and annual reports. You will never know when, who and why someone needs it. I have found all these have been made use of by somebody. This may be one of the reasons why the NTI library is referred to as something special.*

*We get trainees from all over India and from different parts of the world. They have varied backgrounds and interests. I make it a point to introduce them to the services available in our library and guide them how*

*to use it efficiently and quickly. After repeated exposure they understand how to access the information efficiently. After their training is over, they come back to tell me: Madam, we never knew that the library had so much information in such an organised fashion. You showed us the way how to access it effectively. When we go back we will improve our own small libraries. It is this sort of gratitude that gives me immense satisfaction.*

*I also give referral advice to non-professionals or persons from different disciplines. I enquire about their own libraries and guide them on using these. I advise them not to go from library to library seeking information that is available under their own roof. Knowledge of the science of library is not known to most users.*

*The NTI library is quality based. Even though our budget is limited, we exercise care to get the best quality informative material. Our directors support us in this despite the costs. We also have enough experience in accessing special interest documents pertaining to our field from different libraries. We have inter-library cooperation; using it I have collected more than a thousand rare documents on TB from 1940 onwards. Some of them may not be available anywhere else, even in the national library!*

**श्रीमति. सुधा.एस. मुती**

पुस्तकालयाध्यक्ष

१७.०६.१९९८

राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान का पुस्तकालय मुख्यता स्वास्थ्य विज्ञान एवं वैज्ञानिक पुस्तकालयों के अधीन आता है। इस प्रकार के पुस्तकालय प्रमुख बीमारियों जैसे क्षयरोग, कैंसर एवं मलेरिया जैसी बीमारियों के लिए स्थापित किए जाते हैं। यह पुस्तकालय चिकित्सीय, गैर चिकित्सीय, स्नातकोत्तर अन्वेषणकर्ताओं एवं विशेष रोगों की रोकथाम में लगे व्यक्तियों की सहायता करता है। राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान का पुस्तकालय, संस्थान के स्थापना दिवस से ही स्थापित है।

आरम्भ में पुस्तकालय हेतु बजट अल्प था । धन की कमी के कारण बहुत सी पुस्तकों को प्राप्त नहीं कर पा रहे थे । विदेशी स्रोतों पर आश्रित होना पड़ता था । यूनीसेफ तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन ने बहुत से आवश्यक दस्तावेज दान करके बहुत सहायता की।

मैंने राष्ट्रीय राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान के स्थापित होने के ८ वर्ष बाद सन् १९६७ में प्रवेश किया । सभी निदेशकों ने पुस्तकालय के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान किया । इस संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का दृष्टिकोण ऐसा ही है । मैंने यहां पुरातत्त्व केन्द्र भी प्रारम्भ किया है । मैंने यहां प्रोटोकॉल, मैनुअल, तथा अन्य महत्वपूर्ण अभिलेख रखे हैं , जैसे विश्व स्वास्थ्य संगठन की त्रैमासिक रिपोर्ट की प्रतियां सुरक्षित रखी गयी हैं । मैंने बहुत से पैम्पलैट, प्रचार प्रसार सामग्री तथा वार्षिक रिपोर्ट रखी है जिन्हे लोग देखकर फेंक देते हैं । पता नहीं क्यों, कब ओर कैसे यह सब किसी के काम आ जावे सोच कर उन्हें रख लेती हूँ । इसी कारण यह विशेष पुस्तकालय कहलाता है । हमारे यहां पूरे भारत और विश्व के प्रत्येक भागों से प्रशिक्षणार्थी आते हैं उनकी रुचियाँ पुस्तकालय में उपलब्ध सुविधाओं के बारे में संकेत देती हैं और उनका मार्ग निर्देशन करती हैं । प्रशिक्षण के बाद वह कहते हैं कि हमें यह नहीं मालूम था कि इतनी सभी महत्वपूर्ण सूचनाएँ व्यवस्थित रूप से उपलब्ध हैं । आपने इसका सही उपयोग करना हमें बताया। जो लोग पुस्तकालय से जुड़े हैं वह कहते हैं कि वापिस जाकर हम भी अपने छोटे पुस्तकालय में सुधार करेंगे । लोगों का इस प्रकार से प्रेरित होना पुस्तकालय के स्टाफ को अत्यन्त संतोष प्रदान करता है । विभिन्न क्षेत्रों से आए हुए व्यक्तियों के सलाह के बारे में मैं उन्हें मार्ग निर्देशन करती हूँ कि जो जानकारी उनके अपने क्षेत्र में उपलब्ध है उसके लिए उन्हें एक पुस्तकालय से दूसरे पुस्तकालय में जाने की आवश्यकता नहीं है । पुस्तकालय से संबंधित ज्ञान की जानकारी जैसे उसका प्रयोग करने के तरीके का ज्ञान बहुत से व्यक्तियों को नहीं है ।

राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान के पुस्तकालय का आधार गुणात्मक है । सीमित बजट के बाद भी हम अच्छी सूचना वाली सामग्री उपलब्ध कराने का प्रयास करते हैं । पुस्तकालय में विशेष सूचि से सम्बन्धित दस्तावेज उपलब्ध कराने का हमें पर्याप्त अनुभव है फिर भी निदेशक महोदय हमारी सहायता करते हैं। अन्य पुस्तकालयों से भी हमारा अच्छा समन्वय है , इसीलिए हमने १९४० से अब तक एक हजार से ज्यादा दुर्लभ दस्तावेज एकत्र किए । उनमें से कुछ तो राष्ट्रीय पुस्तकालय में भी उपलब्ध नहीं होंगे ।